P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-12* August- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रामायण में वर्णित पर्यावरण : नदियों के परिप्रेक्ष्य में एक अवलोकन

वन्दना गुप्ता
शोधछात्रा,,
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

सारांश

किसी भी राष्ट्र के जन–जीवन को प्रभावित एवं प्रेरित–प्रोत्साहित करने में उसका प्राकृतिक वातावरण अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इन प्राकृतिक वातावरण के निर्माणक है समुद्र, नदी और पर्वत आदि। प्राचीन काल से ही नदियॉ इस देश की प्राणदायिनी शक्तियॉ रही है।

मुख्य शब्द : त्रिपथगा, रमणीय, वेदश्रुति, शोभनीय, विचरण, प्राणदायिनी, सस्यश्यामला, उर्वर,मातृरूपा।

प्रस्तावना

ऋग्वेद के ऋषियों ने इन दिव्य नदियों की महिमा का उद्‌गायन करने के लिए 'नदी सूक्त'[1] के नाम से एक स्वतंत्र सूक्त की रचना की। ऋग्वेद के अनेक स्थलों पर उनकी संख्या 90 या 99 बतायी गयी है। समस्त भरतीय साहित्य में इन नदियों को दैविक तथा भौतिक शक्तियों का स्त्रोत बताकर उनकी श्रद्धा तथा पवित्रता का विस्तार से वर्णन किया गया है। सायण उन्हें मातृरूपा कहते है।[2]

शोध का उद्‌देश्य

आर्यों ने इस देश को अपने स्थायी निवास के लिए संभवतः इसीलिए पसन्द किया कि यहॉ समुद्रों, नदी और झीलों की अधिकता थी। आर्य ऋषियों ने भी अपने आश्रम प्रायः इन्हीं नदी–तें या नदी–संगमों पर बनाये थे, जिससे कि आध्यात्मिक तथा भौतिक द्विविध कामनाओं की पूर्ति की जा सके। भारत के सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन के लिए नदियों की प्राकृतिक दशाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। अतः इस शोध की आवश्यकता हुई।

शोध परिणाम

रामायण में जिन महत्वपूर्ण नदियों का उल्लेख किया गया है वे निम्नवत् है–

सिन्धु नदी

सरस्वतीं च सिन्धुं च शोणंमणिनिभोदकम्।।

अर्थात् सरस्वती और सिन्धु नदियॉ किष्किन्धा के पूर्व में बहती थी। रामायण में अन्यत्र इसका उल्लेख कहते हुए कहा गया है कि सिन्धु नदी के दोनों ओर का प्रदेश सिन्ध है। साथ ही महानदी की भी संज्ञा से सुसोभित किया गया है।[3]

सरस्वती नदी

सरस्वती नदी का वर्णन रामायण में भरत के केकय राज्य से वापस आते हुए किया गया है। भरत ने सर्वप्रथम सरस्वती नदी पार किया तत्पश्चात् गंगा।[4]

विपाशा नदी

रामायण में विपाशा नदी का भी प्रसंग भरत के केकय प्रदेश से वापस आते हुए ही प्राप्त होता है।[5]

शुतुद्री/सतलज

सतलज नदी का वर्णन करते हुए रामायण में कहा गया है कि भरत ने केकय प्रदेश से अयोध्या आते समय सतलज नदी को पार किया।[6]

गंगा नदी

रामायण में गंगा के उत्पत्ति संबधी विवरण प्राप्त होता है। इन्हें शिव के जटा–जूट से निर्गत, देवों एवं ऋषियों से सेवित तथा तीनों लोकों में प्रवाहति होने के कारण त्रिपथगा कहा गया है।[7] अन्यत्र हिमालय को गंगा का पिता बताते हुए गंगा को सभी प्रकार की धातुओं का भण्डार एवं सभी जदियों में श्रेष्ठतम बताया गया है।[8] राम के वनवास प्रस्थान के समय मार्ग में वे श्रृंगवेरपुर पहुँचें जो गंगा के तट पर स्थित था।[9] यहॉ के पर्यावरण का वर्णन करते हुए कहा गया है कि यहॉ पर रमणीय ऋषि आश्रम है। पानी की स्वच्छ धारा तेज प्रवाह में बहती

रहती है। पास ही रेत के ढ़ेर बिछे हुए है। हंसों का, बगुलों का तथा हथियों का तटों पर बसेरा प्राप्त होता है। फलों – फूलों से युक्त यह स्थल अत्यन्त शोभनीय एवं आभूषण युक्त स्त्रियों से परिपूर्ण रहता है। अयोध्या के दूतों ने ने भी केकय से आते हुए इसे पार किया था और सीता ने वनगमन के समय वनवास से सकुशल वापसी की गंगा से प्रार्थना करने का भी वर्णन प्राप्त होता है। वनवास प्रस्थान के समय राम, लक्ष्मण एवं सीता गंगा पार कर वत्सदेश पहुॅचे थे।[10] रामायण में ही गंगा एवं यमुना के संगम का भी वर्णन प्राप्त होता है।[11] सीता के खोज के समय भी सुग्रीव ने वानर सेना के समक्ष इस नदी का वर्णन किया।[12]

मन्दाकिनी नदी

मन्दाकिनी नदी का वर्णन करते हुए रामायण में बताया गया है कि इसी नदी के तट पर राम ने अपनी पर्णकुटी नामक कुटिया निर्मित की थी।[13]

कुटिकोष्टिका नदी

कुटिकोष्टिका नदी का वर्णन करते हुए बताया गया है कि यह गंगा के पूर्व में बहती है।[14]

वेदश्रुति नदी

रामायण में उल्लेख मिलता है कि राम ने वनवास प्रस्थान के समय कोसल की सीमा पार करते हुए इस नदी को पार किया था।[15]

कौशिकी नदी

कौशिकी नदी के उल्लेख में बताया गया है कि गुरू विश्वामित्र ने इसी नदी के किनारे अपनी तपस्या पूर्ण की थी तथा सीता के खोज के समय भी इस नदी का वर्णन प्राप्त होता है। ऋचीक ऋषि की पत्नी के बाद में नदी के रूप में अवतार का वर्णन प्राप्त होता है।[16]

कालिंद/कालिंदी नदी

यमुना से पूर्व वर्णन करते हुए इसका उद्गम कलिंद पर्वत से बताया गया हैं।[17]

यमुना नदी

यमुना नदी को शूरसेन की राजधानी मथुरा के तट पर बसा हुआ बताया गया है।[18]

इक्षुमती नदी

इस नदी का वर्णन अयोध्या के दूतों द्वारा केकय देश की यात्रा के समय प्राप्त होता है।[19]

गोमती नदी

गोमती नदी का वर्णन वेदश्रुति के पश्चात् किया गया है साथ ही यह भी बताया गया है कि इसके कछार में बहुत सी गाएॅ विचरती रहती थी।[20]

सरयू नदी

कोसल जनपद इसी नदी के किनारे बसा हुआ बताया गया है। दशरथ द्वारा इसी नदी के तट पर अश्वमेध यज्ञ करने का भी उल्लेख प्राप्त होता है। सरयू के दक्षिणी तट से अयोध्या की दूरी 11/2 योजन बतायी गयी है। लक्ष्मण द्वारा सरयू का जल पीकर सशरीर मनुष्यों के दृष्टि से ओझल हो जाने का भी उल्लेख प्राप्त होता है।श्रवण द्वारा इसी नदी से अपने अन्धे माता–पिता के लिए जल लाने का उल्लेख प्राप्त होता है। साथ ही यह भी उद्धृत है कि राम ने अपने भाइयों समेत सरयू के गोप्तार घाट में गोता लगाया और विष्णु पद प्राप्त किया।[21]

तमसा नदी

वनवास को प्रस्थान करते हुए राम, लक्ष्मण एवं सीता द्वारा प्रथम रात्रि इसी नदी के तट पर बिताने का उल्लेख प्राप्त होता है।[22] इसे शीघ्र प्रवाहिनी तथा भंवरों वाली गहरी नदी के रूप में भी उल्लिखित किया गया है।

सोन नदी

इस नदी के विषय में उल्लेख करते हुए बताया गया है कि यह गिरिव्रज की पॉच पहाडियों से निकलकर मगध में प्रवेश करती है। इसे सुमागधी नाम से भी दर्शाया गया है।[23]

गंडक/गंडकी नदी

गंडकी को एक महत्वपूर्ण नदी के रूप में वर्णित किया गया है।[24]

सुदामा नदी

इस नदी का वर्णन उस समय किया गया है जब भरत अयोध्या आ रहे थे और रास्ते में उन्होंने इस नदी को पार किया था।[25]

मालिनी नदी

इस नदी का वर्णन करते हुए बताया गया है कि यह उपरताल पर्वत के दक्षिणी ओर तथा पलम्बगिरि पर्वत के उत्तरी दिशा के बीच में बहती है।[26]

महानदी

किष्किन्धा के दक्षिण दिशा में इस नदी का स्थल बताया गया है।[27]

वैतरणी नदी

लंका जाते समय राम ने इस नदी को पार किया ऐसा उल्लेख रामायण से प्राप्त होता है।[28]

नर्मदा नदी

इस नदी को किष्किन्धा के दक्षिण दिशा में और सरिताओं में श्रेष्ठ बताया गया है।[29]

मही/माही नदी

सीता की खोज में सुग्रीव द्वारा वानरों की सेना को भेजते समय इस नदी का वर्णन आता है।[30]

गोदावरी नदी

इस नदी का वर्णन करते हुए बताया गया कि राम लंका जाते समय भद्राचल स्थल पर इस नदी को पार करते है।[31]

कृष्णावेणी नदी

इसे किष्किन्धा के पूर्व में बहने वाली नदी बताया गया है।[32]

तुंगभद्रा नदी

इस नदी को पम्पा सरोवर के निकट स्थित बताया गया है।[33]

कावेरी नदी

वानरों को सीता की खोज के लिए भेजते समय सुग्रीव दक्षिणी दिशा में इस नदी का वर्णन करते है।[34]

ताम्रपर्णी नदी

इस नदी का वर्णन करते हुए बताया गया है कि इसी नदी के तट पर अगस्त्य ऋषि का आश्रम था।[35]

निष्कर्ष

नदियॉ वस्तुतः इस देश की प्राणदायिनी शक्तियॉ रही है और उनके कारण यह भारत–भूमि सतत् सस्यश्यामला और उर्वर बनी रही। ये नदियॉ भारत की भौगोलिक तथा ऐतिहासिक स्थितियों की सूचक तथा धार्मिक और सामाजिक जीवन की प्रेरणास्रोत रही है। वे अतीत के समान आज भी मनुष्य की आध्यात्मिक तृप्ति का साधन और कृषि तथा व्यापार की दृष्टि से भैतिक उन्नति की सहायिका बनी हुई है।नदियॉ भारत की अर्थव्यवस्था की जीवन रही है। सम्पूर्ण विश्व की प्राचीन सभ्यताऍ व नगर किसी न किसी नदी तट पर ही बसे। भारत के धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन में नदियों का महत्वपूर्ण स्थान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *ऋग्वेद, 10.75.*
2. *ऋग्वेद भाष्य 8.85.1.*
3. *वाल्मीकिय रामायण, किष्किन्धा काण्ड, 40.21.*
4. *वही अयोध्या काण्ड, 71.5.*
5. *वही, अयोध्या काण्ड, 68.19.*
6. *वही, अयोध्या काण्ड, 71.10.*
7. *वही, अयोध्या काण्ड, 50,12,14,16,25.*
8. *वही, बाल काण्ड, 35.22.*
9. *वही, अयोध्या काण्ड, 50.26.*
10. *वही, अयोध्या काण्ड, 50.13,17–24, 54.8, 68.13, 52.82–86, 52.101.*
11. *वही, बाल काण्ड, 45.9.*
12. *वही, किष्किन्धा काण्ड, 40.20.*
13. *वही, अयोध्या काण्ड, 50.35, 92.11–12.*
14. *वही, अयोध्या काण्ड, 71.10.*
15. *वही, अयोध्या काण्ड, 49.10.*
16. *वही, बाल काण्ड, 63.15, 34.6–11, किष्किन्धा काण्ड, 40.20–21.*
17. *वही, किष्किन्धा काण्ड, 40.20.*
18. *वही, अयोध्या काण्ड, 71.6, उत्तर काण्ड, 70.11.*
19. *वही, अयोध्या काण्ड, 68.17.*
20. *वही, अयोध्या काण्ड, 49.11.*
21. *वही, बाल काण्ड, 5.5,8.11–12, 22.12–17, उत्तर काण्ड, 106.15–17,110.22–23, अयोध्या काण्ड, 63. 20,21–36.*
22. *वही, अयोध्या काण्ड, 46.14,26.*
23. *वही, बाल काण्ड, 32.9.*
24. *वही, अयोध्या काण्ड, 15.8.*
25. *वही, अयोध्या काण्ड, 71.1.*
26. *वही, अयोध्या काण्ड, 68.12.*
27. *वही, किष्किन्धा काण्ड,, 41.9.*
28. *ला0 वी0 सी0, होली प्लेस आफ इण्डिया, पृ0 15.*
29. *वही, किष्किन्धा काण्ड, 41.8.*
30. *वही, किष्किन्धा काण्ड,, 40.22.*
31. *डे0 एन0 एल0, द ज्योग्राफिकल डिक्शनरी आफ एंशिएण्ट इण्डिया, पृ0 70.*
32. *वही, किष्किन्धा काण्ड,, 41.9.*
33. *वही, अरण्य काण्ड, 6.17.*
34. *वही, किष्किन्धा काण्ड, 41.14.*
35. *वही, किष्किन्धा काण्ड, 41.15–16.*